

आर्य समाज

1.148

ASNA ARCHIVES



[illegible]

चलिकुचलुमलुदलनी ॐ मकारे ॐ ऐकारे ॐ युक्ते वक्ष्ये शिखरे ज्ञाये विज्ञाये मायाये ध्याये  
थे ॐ द्वादश ॐ स ४ अम ॐ ती स ख क न द शी क ल उ य च लुता नाम महि म म द नी ग्राणि वृना रे न  
वीशु मृ न श्य नी कि न म स ॐ का ह सि नि ४ ८ ग्रा कृ डि का गु द काली हा सा दि य थे काली ग्रा सि  
द्वि लक्ष्मी मार्क ॐ महा रे न व ॐ वृ च वृ वी लक्ष्मी ॐ स ४ ॐ द्वादश क व ली महा ह र्य ना ग य २ गि नि  
के ला ८ ग य च र्ग न वा सि नी कृ ज गी ह कानां म ह र्य क नू २ य द्वा द्वा त वि ग्रा च ना द्वा स द्वा आ गु व ता ल ४



किनीह्य ४ सर्वेह्य ४ रचना गकनू २ कल ४ वृकल सदा गगन निलयन द्वांकनू २ रुन २ वक्ता  
 नीवें माह ग्वनी को मा नी वे सु वी धान वती गका ल्ये चामू अथि महा ल द्यो गिव दू ह्ये तान सिं ही जी अ  
 किनी नीना किनी लाला किनी कां का किनी सी सा किनी ही हा किनी ची चा किनी नूड च अ व च अ  
 च अ य च अ ना यिका च अ च अ वती च अ नू वा अ ति च अ का अ गिता अ नू च अ का अ उ नू कू कू  
 याली सी स नी सी हान रे न व ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह का ठि न द्वा य गिनी सा अ का ती व द्वा २ थ अ का ती व द्वा २ थ अ का ती व द्वा २ थ

२

न  
 मू मू सर्वजं दे रि नी सर्वजन मा रि नी सर्वजन म व ग्य का रि नी सर्वन रु स नी सर्वजु नू अ र्थ  
 के द्यो मू रगु वती नू य न सर्व सि द्वि न्द २ श्री कल कृ डि क रे ला का द्वा र्थ नी द्यो श्री कामी  
 मू द्यो विनी को को महा द्वा र का रि नी ग्रे को स ४ श्री क नू तां य न म ४ हा रु रु क व व द्वा  
 वताल पी यि य न व क क अ अ सि डि क क काला द्वा ग्रे व क क न क ग्रे व क या द न ही म नू य मा म ल य अ हा  
 ट क ग्व न रे न व कि नि २ कि चि २ कल २ क द य २ अ क २ कां कां कू कू कू कू कू ४ माल य २ महा य द्वा ना जा य ज

था ३



चिनी विज चिनी वस २ ब्रामय २ व मावय २ च लुभा वि ली ती मवन महर्षि ग्राम दननी स्वचन विचडा ठिया  
नजालं अनवृष्टि गिनिकाम वृवयी ० हिमकनवा नादि अष्टगम गानवा सिती महाना अष्टा नाजल द्वा स्व  
वृथ वृष्टि र्दद २ कूनु २ महाका नू ली थ कालना सिती अय मलू ना गय २ वृष्टि वृष्टि ममा गिन वृ २ महा  
युद्ध युद्ध कानि ली महा अष्ट नाज अष्ट सिद्धि र्दद २ गु ठिका अष्ट नवा ताल यादन यन हा यन सिद्धो यमी  
चिकाम ली मनु सिद्धा वृव र्द अष्ट अष्ट गिनी विच वृद्धा विद्धू नूड वृष्टि न स दा गिन वृव र्द यन निहार्य

[illegible]



प्रनक्षत्राणि सादि, वक्रनाक्षत्राणि किनी ॥ प्रनाद्यायु महाविद्या, य० नादवनत्यति ॥ सवर्षेकं  
यूनस्तुत्य, निष्सायाज तैलु यत्नन ४ ॥ अंक्षा सिद्धिरवत्तु नः ॥ रवत्यशोनसंशय ॥ सैर्यकामय  
तकामः ॥ तैर्यसिद्धिगितान्यथ ॥ सत्यं सत्यं महादेवी, सद्यस्तुल्यदा ॥ नवकथं नवकथं ॥  
यित्तयं वज्रत ॥ तवस्तुल्यमहात्मा, अतिगुह्यं वचनं ॥ महावी० हृदयी० विद्यावी० वि  
॥ गत ॥ प्रकृताय० तवस्तु, गतजाय हर्ललत् ० ॥ गतवालय० द्यु सवर्षकामान्मवावृत्ता ० ॥

अने विमानमानुषः दिव्यश्री गतसंयुत ॥ मन्त्राक्षमत्यसादन, कल्याणवीर्यवत्नन ४ ॥ दिव्यश्री  
समायत्ता, इन्द्रालोकप्रशस्ती ॥ यावन्ति विनयं याकि दुलनाणा विवानन ४ ॥ ॐ नित्यं दत्तमदेवी, नद  
सैत्यकस्यचित् ॥ ननास्ति कायमुख्यं, नक्षत्राद्यनमानि ॥ नद्वैतमतयदद्या ० मातृकायक  
दात्तन ॥ दातुर्यं किंचिच्छास्त्र, कलदीक्षानतायच ॥ ॐ निलयकालीतनुवचं ॥ ॐ नमः ४ व  
गुयनस्य ॐ नमो नमो सिधनस्य ॐ नमो नमो दासनमः ४ ॥ ॐ नित्यं नमो गुयनिमनु ४ ॥







[illegible][illegible]



[illegible][illegible]



कनरुटखाहा ॥ दूँ दूँ दोँ दोँ काटिकाटिरुनूयनिवगकननानिकाणसिनगिपि  
सूकैय मेरुसम्वर्तकालिनरुयवसाविनयादाखाटयनिवकिंगसकदोयरुटखा  
हा ॥ दूँ दूँ दोँ दोँ चननविद्यासाननश्रीरुनकम० गजरा गज अक्षरिगसक  
दुगानक० कनन निगमागमनिमहासयूनाम गजचनननरुटखाहा ॥ दूँ दूँ दोँ  
दोँ दोँ रुकजनरुदयसकायनिवाजिलिदु० खगजारिदुगसंगमाडे दमसकल

ASHA ARCHIVES

आमनभरुदधि  
ASHA ARCHIVES

1.1/13